वर्ष -14 सितम्बर, 2018 अंक-148

Regd. Postal No. Dehradun-328/2016-18
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

इस अंक में

क्या याद रखना?	02
देववाणी	03
सम्पादकीय	04
न जाने लोग क्यों डरते हैं?	05
परलोक- रोज़मर्रा की ज़िन्दगी	06
परलोक सम्बन्धी जानकारियाँ	07
क्या पढ़े?	12
What is death?	14
परलोक के विषय में देवात्मा....	16
मरणोपरान्त शरीरदान	24
श्राद्ध सभा	26
भाव प्रकाश	27
बाल व्यक्तित्व विकास शिविर	31
भावी शिविर	32

जीवन व्रत

'सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।'
- देवात्मा

सम्पादक
नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल
अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : प्रमोद कुमार कुलश्रेष्ठ

**For Motivational Talks/Lectures/Sabhas :
Visit our channel Shubhho Roorkee on
www.youTube.com**

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

वार्षिक सदस्यता ` 100, सात वर्षीय ` 500, पन्द्रह वर्षीय ` 1000
मूल्य (प्रति अंक): ` 9

सम्पर्क सूत्र : पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु
दूरभाष संख्या: 01332-272000, 94672-47438, 99271-46962 (संजय धीमान)
समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)
e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

क्या याद रखना?

शरीर मिट्टी का कच्चा घड़ा है। कच्चे घड़े में पानी रखोगे तो वह कब तक टिकेगा? शरीर भी ज़्यादा समय टिकने वाला नहीं है। शरीर को बनने में नौ महीने लगते हैं, लेकिन मिटने में एक क्षण भी नहीं लगता। रात में कितने भी सपने देख लेना, लेकिन आँख बन्द होते ही तुम्हारी चीज़ों पर दूसरों का कब्जा हो जायेगा। जहाँ तुम्हारे नाम की नेम प्लेट लगी है, वह हट जायेगी और वहाँ दूसरे के नाम की लग जायेगी। आज जहाँ बैठकर तुम हुक़्म चलाते हो, वहाँ कल कोई दूसरा हुक़्म चला रहा होगा। बस! इतनी सी बात याद रखना।

– मुनि तरुण सागर

WHO IS A MEDIUM?

A medium is a person who is able to act as the mouth piece for departed spirits.

मध्यवर्ती (मीडियम)

मध्यवर्ती वो व्यक्ति होता है, जो दिवंगत आत्माओं के लिए एक मुखपत्र (माउथपीस) की भाँति कार्य कर सकता है।

WHAT IS AUTOMATIC WRITING?

Automatic writing is a means of communication with departed spirits using pen and paper. The pen moves over the page directed by a power other than the conscious mind of the person holding it.

स्वचालित लेखन क्या है?

स्वचालित लेखन दिवगंत आत्माओं से कागज़ व पेन की सहायता से संचार स्थापित करने का ढंग है, जिसमें जिसने पेन पकड़ा हुआ है, उसके चेतन मन से इतर किसी शक्ति से कागज़ पर पेन चलता है।

If the rich could hire other people to die for them, the poor could make a wonderful living.

- Jewish proverb

देववाणी

हे मनुष्य! तू केवल शरीर ही नहीं आत्मा भी है, केवल शारीरिक सुखों की तृप्ति में उम्र बर्बाद मत कर।

– देवात्मा

It is impossible that anything so natural, so necessary and so universal as death should even have been designed by Providence as an evil to mankind.

- Jonathan Swift

मृत्यु के प्रति हमारी नफ़रत उतनी ज़्यादा होती है, जितनी इस बात की चैतन्यता रहती है कि हमने अपना जीवन व्यर्थ खो दिया है।

– विलियम हज़लिट

सत्यदेव संवाद का विशेषांक

'सत्यदेव संवाद' के इस विशेषांक का उद्देश्य यह बताना है कि क्यों व कैसे जो जीवन हम आज जी रहे हैं, मृत्यु उपरान्त जो जीवन हममें से प्रत्येक जियेगा, उसकी गुणवत्ता को निर्धारित करता है।

☺☺☺☺☺☺ xqxqh

एक आदमी ने कण्डक्टर से पूछा, ''आप कितने घण्टे बस में रहते हो?''

कण्डक्टर, ''24 घण्टे!''

आदमी, ''वो कैसे?''

कण्डक्टर, ''देखिये, 8 घण्टे तो सिटी बस में रहता हूँ और शेष 16 घण्टे बीवी के बस में रहता हूँ।''

यदि अमीर अन्य लोगों को उनके मरने के लिए किराये पर ले सकते, तो ग़रीब एक अद्‌भुत जीवन बना सकते।

– यहूदी कहावत

सम्पादकीय

क्या मृत्यु के बाद जीवन एक पहेली है?

पृथ्वी के ऊपर जितने भी धर्ममत व सम्प्रदाय उत्पन्न हुए, उनका मुख्य उद्देश्य समय व हालात के अनुसार उस समय के समाज को दिशा देना रहा है। जीवन में उच्च मूल्यों यथा विनम्रता, ईमानदारी, प्रेम, सेवा आदि पर प्राय: प्रत्येक धर्म में ज़ोर दिया गया है। प्राय: देखा यही जाता है कि प्रत्येक धर्म को मानने वाले अपने ही धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानकर चलते हैं, जबकि अच्छाई व बुराई प्रत्येक धर्म में मिलेगी।

परन्तु मृत्यु के उपरान्त जीवन के सम्बन्ध में विभिन्न धर्मों व सम्प्रदायों में सबसे ज़्यादा परस्पर विरोधी धारणाएँ प्रचलित हैं, इसी कारण मानव समाज में इस विषय में सबसे अधिक भ्रान्ति पाई जाती है। शायद इसीलिए आजकल के पढ़े लिखे समाज का बड़ा हिस्सा जड़वाद (Materialism) की ओर झुकता जा रहा है तथा यह मानकर चल रहा है कि मृत्यु के बाद उसका कुछ भी बकाया नहीं रहता। यही दुनिया है, कमाओ, खाओ व मौज़ करो। मरने के बाद किसने देखा है? किसी ने बताया तो कुछ है नहीं वहाँ से लौटकर, आदि-आदि विचार आम मनुष्य के मन में घर किए रहते हैं।

अत: क्या यह मान लिया जाए कि मृत्यु के बाद जीवन एक पहेली है, जो कभी सुलझेगी नहीं। अत्यन्त सन्तोष का विषय है कि ऐसी निराशाजनक स्थिति वास्तव में नहीं है। मृत्यु के बाद परलोक का जीवन सत्य है, परलोकवासी सत्य हैं, उनसे सम्पर्क कर पाना सत्य है, वहाँ के नियम व व्यवस्था का ज्ञान भी सत्य है। यदि हम अपने-अपने धर्म की चारदीवारी से थोड़ा बाहर आकर निष्पक्ष ढंग से सोचने व समझने की कोशिश कर पायें, तभी यह सत्य ज्ञान मिल पाना सम्भव है।

यदि हम परलोक जगत् के नियमों को जान लें, उसके अनुसार जीवन यापन करें, तो केवल परलोक ही नहीं, यह लोक भी सुधरता है। 'सत्य देव संवाद' के इस विशेषांक में इन्हीं कुछेक नियमों व तथ्यों पर सारगर्भित विश्लेषण किया गया है। आशा है कि प्रबुद्ध पाठक खुले मन से इनके पाठ व विचार से लाभ उठायेंगे। स्वयं मैं सन् 2002 से निरन्तर ऐसे अनुभवों में से गुज़र रहा हूँ, जिनके आधार पर मैं दृढ़ विश्वास से कह सकता हूँ कि परलोक एक अटल सच्चाई है। जितना हम रूढ़िवादी कल्पनाओं से बाहर आकर तथा जड़वादी दृष्टिकोण से हटकर इन तथ्यों का अध्ययन करेंगे, उतना ही अधिक लाभान्वित हो पायेंगे। यह विशेषांक हम सबके लिए विशेष प्रमाणित हो, ऐसी है शुभकामना!

– प्रो. नवनीत अरोड़ा

Our repugnance to death increases in proportion to our consciousness of having lived in vain.

-William Hazlitt

न जाने लोग क्यों डरते हैं?

परलोक की चर्चा करने में, न जाने लोग क्यों डरते हैं;
यह तो एक अटल सच्चाई है, क्यों ठण्डी आहें भरते हैं।

पहुँचाकर हानि औरों को, ख़ुश होते रहें चाहे जितना;
है पकड़ी राह मृत्यु की, और जीने का दम भरते हैं।
परलोक की सच्चाई.....

जीवन भर औरों को लूटा, जब चलने की बारी आई, जो लूटा सब पीछे छूटा;
क्यों ध्यान न आया तब उनको, जब हक औरों का हरते हैं।
परलोक की सच्चाई.....

नेचर के नियम बड़े सच्चे, जो रहे सदा उन पर पक्के;
और चलें धर्म के मार्ग पर, जीवन उनके ही संवरते हैं।
परलोक की सच्चाई.....

जिन जनों ने कर्म किए अच्छे, चारों जगत के प्रति रहे सच्चे;
सत्यधर्म की पूँजी है जोड़ी, भय से न कभी सिहरते हैं।
परलोक की सच्चाई.....

परलोक से देवगुरु जी ने, हमको हैं जो संदेश दिए;
सम्बन्धों में जीवन जीने के, जो हैं हितकर आदेश दिए।।
जो दिल से करें पालन उनका, ख़ुशियों से झोली भरते हैं।
परलोक की सच्चाई.....

– वीरेन्द्र डोगरा (योलकैण्ट), कांगड़ा, हि.प्र.

परलोक विषयक ज्ञान प्राप्त करके हम अपने परलोकगत पारिवारिक जनों व अनेक उच्च जीवन प्राप्त जनों से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं।

परलोक- रोज़मर्रा की ज़िन्दगी

प्रश्न: परलोक कहाँ है? वह धरती से कितना दूर है? क्या वहाँ पर भी दिन और रात हैं? जब वहाँ पर किसी तरह का पैसा नहीं है, तो वहाँ अर्थव्यवस्था (economy) कैसे चलती है?

उपदेश: चलो, आज देखते हैं परलोक की रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के बारे में। परलोक कहाँ है? देखा जाए, तो परलोक यहीं, इसी धरती पर है और देखा जाए, तो यहाँ से दूर दूसरा संसार है। पास इसलिए कि किसी भी एक वक़्त पर हममें से आधे लोग यहीं, अपने परिवार और दोस्तों के पास रहते हैं, उनकी देखभाल के लिए, उन्हें सही राह दिखाने के लिए, उनकी अन्तरात्मा के साथ काम करते हुए। और, जब यहाँ से दूर वापस जाते हैं, तो वह परलोक हुआ, जिसके बारे में इतनी सारी कल्पनाएँ की गई हैं। कितनी दूर है यह बताकर क्या होगा? इन्सानी विज्ञान अभी इस जगह पर नहीं पहुँचा कि हमें देख भी सके। मानो-गतिक क्षेत्र (Psycho-kinetic field) के बारे में अभी बहुत कम खोज (research) हुई है। हाँ, हमें यह दूरी बहुत ज़्यादा नहीं लगती, क्योंकि यहाँ हम विचारों के बल पर यात्रा करते हैं और हम किसी भौतिक साधन से बँधे हुए नहीं हैं।

दिन-रात, यदि धरती पर रहते हैं तो होते हैं, किन्तु परलोक में नहीं होते। तुम सोच रहे होगे कि आहा, इसका मतलब परलोक सूरज के चारों ओर चक्कर नहीं लगाता और इस सौरमण्डल का भाग नहीं है। भाई, तुम्हारी दुनिया के के भौतिक विज्ञान के नियम यहाँ अधिकतर लागू नहीं होते। यहाँ के क़ानून वहाँ से अलग हैं।

भौतिक शरीर नहीं है, इसलिए हमें भोजन की ज़रूरत नहीं होती। ऐसे ही हर चीज़ अलग है और अपने हिसाब से चलती है। पैसा, जैसाकि तुम उसे पृथ्वी पर जानते हो, यहाँ नहीं होता। तुम्हें यह समझाने का सबसे आसान तरीक़ा कि उसके बिना यहाँ काम कैसे चलता है। आत्मिक पूँजी यहाँ पर प्रायः धन की जगह लेती है। दूसरे शब्दों में, तुम्हारे कर्मों का खाता यहाँ रोज़ के जीवन में तुम्हारी मदद करता है। यहाँ का जहान निराला है, अच्छा है, यदि तुम अच्छे काम करके, अच्छी आत्मिक पूँजी जुटाकर यहाँ आते हो, अन्यथा इन्सान ख़ुद को यहाँ अकेला और बेसहारा पाता है और वापस धरती पर जाने के लिए उत्सुक रहता है। और, जब हम धरती पर कभी आते हैं, तो हमें दूसरों के लिए अच्छे काम करने होते हैं, दूसरों की मदद करनी होती है, एक तरह से अपने आने-जाने का ख़र्च करके, पहले से ग़रीब होकर वापस जाते हैं। इस बात पर जितनी

The body dies, but the spirit is not entombed.
-Dhammapada

बार ज़ोर दूँ, कम है कि यही काम परलोक में करने की तुलना में इन्सानी रूप में रहते हुए करना, अर्थात् आत्मिक पूँजी इकट्ठा करना, बेहद आसान है। जितनी ज़्यादा हो सके, लोगों की सेवा, सहायता करो और आत्मिक पूँजी जुटाते चलो।

– परलोक सन्देश

परलोक सम्बन्धी जानकारियाँ

परलोकवासियों ने परलोक सम्बन्धी अपने-अपने अनुभवों को मध्यवर्तियों (Mediums) को स्वचालित लेखन (ऑटोमेटिक राइटिंग) विधि अथवा मध्यवर्ती के द्वारा बोलकर द्वारा लिखवाया है। इस विषय में सैकड़ों पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। परलोकवासी आत्माओं द्वारा लिखवाये गए ज्ञान में से कुछेक महत्त्वपूर्ण अंश इस प्रकार हैं:

(A) परलोकगत श्री गोर्डन ने श्रीमती ग्रेस रोशर को सन्देश लिखवाए हैं जो 'बियोण्ड दी होराइजन' नामक पुस्तक में छपे हैं, जिसका प्रकाशन मेसर्स जेम्स क्लार्क एण्ड कं. लि. 33, स्टोर स्ट्रीट, लन्दन से हुआ है। इस पुस्तक में छपी कुछ बातें नीचे दी जा रही हैं:

- परलोक के जीवन के सम्बन्ध में भूलोक में बहुत मिथ्या और निराधार धारणाएँ व्याप्त हैं और यदि थोड़ा सा सही ज्ञान मानव पा सके, तो उसका जीवन बहुत ऊँचा हो सकता है। पैसे व पद के लिए दुनिया में मानव जितनी भागदौड़ कर रहा है, ऐसे लगता है सारी मानवता बुलबुलों के पीछे भाग रही है। स्मरण रखो हम अपने स्वर्ग व नरक की रचना स्वयं ही करते हैं। यदि हम प्राणी मात्र को अपना प्रेम देना सीख लें, तो हम एक ऐसे स्वर्ग की अनुभूति कर सकते हैं, जिसको भाषा में बताना असम्भव है। जो लोग केवल अपने लिए ही सोचना जानते हैं, वे कभी सुखी नहीं रह सकते।
- मैं तुम्हें एक प्रार्थना लिखवा रहा हूँ, उस पर मनन करने पर तथा उसके अनुसार आचरण करने पर मनुष्य लोक व परलोक दोनों स्थानों पर ऊँचा स्थान पाता है।

''हे प्रभु! मुझे एक ऐसा हृदय दे, जो न केवल उनको प्यार दे सके, जो मुझे प्यार करते रहे हैं, परन्तु जिसकी विशाल बाँहों में सारा संसार समा सके और जो इतना उदार हो कि उनके प्रति भी करूणाशील बना रहे, जो सदैव मेरे घावों पर नमक छिड़कते रहे हों।''

शरीर मरता है, किन्तु आत्मा दफन नहीं होती।

– धम्मपद

- ❖ भूलोक में मनुष्यों को साफ़-साफ़ यह बताया जाए कि परलोक में ठीक ऐसे वातावरण में वे अपने आपको पायेंगे, जिसकी सृष्टि उन्होंने अपने दैनिक व्यवहार से अपने भौतिक जीवन में की होगी।
- ❖ मृत्यु के बाद स्थूल शरीर नष्ट हो जाता है, मनुष्य एक सूक्ष्म शरीर को धारण करता है, जो उसके गत स्थूल शरीर के अनुरूप होता है। यदि स्थूल शरीर में अंग भंग हों या अपाहिज हो, तो सूक्ष्म शरीर अंग भंग वाला या अपाहिज नहीं बनता।
- ❖ पृथ्वी पर रहने वाले वे धनी पुरुष जिनका ध्येय केवल रुपया कमाना ही होता है और जो इस रुपये को ऐय्याशी में व्यय करते हैं, वे स्वभाव से अवसरवादी, स्वार्थी और बेईमान होते हैं। परलोक में सबसे अधिक गरीब ये ही लोग होते हैं, क्योंकि उनके भौतिक जीवन की पैसा कमाने की कार्यकुशलता इस लोक में बिल्कुल अर्थहीन बन जाती है। परलोक में हृदय की विशालता जीवन में सौरभ भर देती है और संकुचित् हृदय, जिसके वो आदी होते हैं, परलोक में केवल दरिद्रता प्रदान करता है।

(B) परलोकवासी जूलिया ने डब्लू. टी. स्टेड को सन्देश लिखवाए, जो पुस्तक रूप में सन् 1897 में छपे। पुस्तक का नाम था 'आफ्टर डेथ'। इस पुस्तक में से कुछ अंश इस प्रकार हैं:

- ❖ परलोक में आकर मैंने पाया कि यहाँ के लोगों के चेहरों पर बुढ़ापा नहीं था। पूर्ण ज़वानी और स्वस्थ अवस्था में जो उज्ज्वलता होती है, वह सबके चेहरों पर विद्यमान थी।
- ❖ परलोक में किसी को न थकावट होती है, न कभी निद्रा की आवश्यकता होती है। यहाँ पर न भूख सताती है, न प्यास।
- ❖ परलोक में आकर मनुष्य के होश और हवास बिल्कुल वैसे ही होते हैं, जैसे उसके जीवनकाल में थे। उसके पास वही मन, वही ज्ञान, वही आचार-विचार सब अपने पुराने रूप में सुरक्षित रहते हैं। उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता।
- ❖ परलोक में बहुत से ऐसे व्यक्ति है, जो आध्यात्मिक और पवित्रता के स्तर पर बहुत ऊँचे समझे जाते हैं, यद्यपि भूलोक में उनकी गणना शुद्र और त्याज्य लोगों में की जाती थी। भूलोक की बाहरी तड़क-भड़क यहाँ परलोक में

When good men die their goodness does not perish, but lives though they are gone.

-Euripides

बिल्कुल समाप्त हो जाती है और प्रत्येक मनुष्य का वास्तविक रूप, जैसाकि वह हृदय से है, सामने आ जाता है।

(C) परलोकवासी मौन्सिगनर बैन्सन ने ऐन्थोनी बौर्गिया को सन्देश दिए, जो 'मोर एबाउट लाइफ इन दी वर्ल्ड अनसीन' नामक पुस्तक में 1956 में छपे हैं। उसमें से कुछ बातें नीचे दी जाती हैं-

❖ यहाँ परलोक में न कोई धर्मराज है, न किसी अदालत में मृत व्यक्तियों को पेश किया जाता है। प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपना नियन्ता है। परलोक में प्रत्येक मनुष्य वास्तविकता के बहुत समीप होता है और उसे अपनी ग़लतियों एवं त्रुटियों को सुधारने का पूरा मौक़ा मिलता है। इस भ्रान्ति को कि ईश्वर कभी जजमेण्ट के दिन आएगा और तब तुम्हारी फाइल देखी जाएगी, अपने मन से सदा के लिए निकाल दो।

❖ यह कितनी दयनीय स्थिति है कि पृथ्वी के करोड़ों लोग परलोक सम्बन्धी सच्चाई से अनभिज्ञ हैं और वे उसे जानने के लिए तैयार भी नहीं हैं। सारी परेशानी इस बात से है कि भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय और धर्म के ठेकेदारों तक इस लोक की सच्चाई जब किसी तरह पहुँचती है, तब उसकी रूपरेखा उनके प्रचलित धार्मिक ज्ञान से बिलकुल भी मेल नहीं खाती। सच्चाई इसलिए भी नहीं अपनाई जाती क्योंकि ऐसा करने से अमुक सज्जन की दालरोटी एवं पद खटाई में पड़ जाते हैं।

❖ दोज़ख (नरक) जिसकी रूपरेखा विविध धर्मों ने विभिन्न प्रकार से खींची है, ऐसा कोई स्थान परलोक में नहीं है। परन्तु परलोक में कुछ बस्तियाँ ऐसी हैं, जहाँ पर मन अवश्य आक्लान्त हो जाता है और एक प्रकार की घुटन सदा अनुभव होती रहती है। उन स्थानों के प्रत्येक व्यक्ति को यह छूट है कि वह उस दुःखद वातावरण से किसी समय भी छुटकारा पा सकता है, परन्तु वह अपने नीच विचारों के कारण अपना दोज़ख स्वयं बनाए रखता है। कभी-कभी ऐसे आदमियों को उठाने में बड़ा संघर्ष करना पड़ता है।

❖ मैं यह बताने में बिलकुल भी नहीं सकुचाता कि जब मैं यहाँ आया था, तब यह स्थान बिलकुल ही दूसरा था- एकदम दूषित। भूलोक में जब मैं जीवित था, तब वहाँ मैं एक सफल व्यापारी था। रुपया प्रचुर मात्रा में कमाया था। मैं पैसा कमाने के लिए सारे हथकण्डे उचित समझता था, बशर्ते वे सारे करतब कानून की पकड़ से बाहर

जब अच्छे लोग मृत्यु को प्राप्त होते हैं, तो उनकी अच्छाई ख़त्म नहीं हो जाती है, वो उनके जाने के बाद भी ज़िन्दा रहती है।

- यूरिपिडीस

हों। मैं अपने कार्य में कुशल भी था तथा समय की आवश्यकतानुसार कभी-कभी बिलकुल हृदयहीन भी बन जाता था। अपने परिवार में केवल मेरी बात चलती थी, चाहे वह ठीक हो या ग़लत।

मैं कभी-कभी दान भी देता था और उस समय दिल खोलकर देता था। मगर ऐसा तभी करता था, जब मैं यह समझता कि मेरे ऐसा करने से अधिक लाभ होगा और मेरी खूब ख़्याति होगी। दूसरे शब्दों में, मैं अपने-आप को दूसरा ईश्वर समझता था। मेरा विश्वास है, मैं जब मरा था, तब मेरी एक ऊँचे दर्जे की अन्त्येष्टि की गई होगी, परन्तु अब मुझे ज्ञात हो गया है कि भूलोक में एक भी ऐसा प्राणी नहीं है, जिसको मेरे मरने पर लेशमात्र भी दु:ख हुआ हो।

जब मैं परलोक में जागा, तब मैंने अपने आपको एक अत्यन्त गंदी और दूषित कोठरी में पाया। वह जगह मैं अब भी दिखा सकता हूँ। भूलोक में मैं एक भव्य महल में रहता था और उसके मुक़ाबले में वह काली कोठरी बिना किसी बाग-बगीचे के इस जीवन का सबसे कडुआ अनुभव था। मेरी अथाह दौलत और पैसा, जिन्हें मैं छोड़ आया था, मेरी दरिद्रता को दूर करने में बिलकुल सहायक नहीं थे। मेरी दरिद्रता तो इसलिए थी क्योंकि मेरे पास एक दरिद्र आत्मा थी और जो कुछ मैंने इस परलोक में पाया, वह उसी का फल था। मैंने भूलोक में किसी के लिए न कभी कुछ सोचा और न ही कभी कुछ किया था। मैं तो भूलोक में केवल अपने लिए ही जीता रहा।

मैं उस समय जो कपड़े पहने हुए था, वे सब गंदे और फटे हुए थे और उस समय सिवाय क्रोध करने के और कुछ कर भी नहीं पा रहा था। सबसे विचित्र बात, जो उस समय मैं अनुभव कर रहा था, वह यह थी कि मेरे लाख प्रयत्न करने पर भी, मैं उस स्थान को छोड़ने में असमर्थ था। मुझे ऐसा मालूम होता था, जैसे मुझे किसी ने उस जगह से चिपका दिया हो।

मेरे चारों तरफ ऊसर ज़मीन पड़ी थी और वायुमण्डल एक विचित्र प्रकार का धूमिल और मलिन था। ऐसी विषादपूर्ण स्थिति में एक दिन श्री एडविन ने मेरे पास आकर मुझे देखा। वह बेचारा उस दिन मेरे पास आया और जैसा कि मेरा पृथ्वी पर सदैव स्वभाव रहा है, मैंने उससे बड़ा अवहेलनापूर्ण व्यवहार किया। उसने मेरे अशिष्ट व्यवहार की तनिक भी परवाह नहीं की और शान्त और करुणापूर्ण मुद्रा में खड़ा रहा।

Death is, after all, the only universal experience except birth.

- Stewart Alsop

मैं उस समय क्रोध से भुना जा रहा था और वह क्रोध मुझे और अधिक संताप दे रहा था, क्योंकि मैं यह जानता था कि मेरी इस अधोगति के लिए कौन ज़िम्मेदार है। मुझे उन धर्म के ठेकेदारों पर भी क्रोध आता था, जिनहोंने मुझसे दान लेते समय मेरी प्रशंसा के पुल बाँधे थे। एडविन मुझे कुछ उपदेश देकर चला गया। मैंने उन उपदेशों की तनिक भी परवाह नहीं की।

मुझे याद है, कुछ समय बाद वह श्री बैन्सन और रुथ को लेकर मेरे पास आया। वह दिन मेरे लिए एक नया दिन साबित हुआ। रुथ और बैन्सन पीछे खड़े थे और एडविन मुझसे बोल रहे थे।

उस दिन मुझे क्रोध बहुत कम आया, क्योंकि मैं लगातार रुथ को देखता रहा। उसकी आकृति ने मुझे मेरी एकमात्र बेटी की याद दिला दी थी, जिसे मैं बहुत प्यार करता था, यद्यपि कभी-कभी मैं अपनी लड़की से भी औरों की तरह क्रूर व्यवहार करता था। पता नहीं क्यों, कदाचित उस क्षणिक प्रेम के आवेग के कारण मैंने अपने अन्दर एक सुखद परिवर्तन का अनुभव किया।

आगन्तुकों के चले जाने के बाद मुझे एक भीषण एकाकीपन अनुभव होने लगा और फिर आत्मग्लानि ने आ घेरा।

उस निराश यामिनी में मैं इतना दु:खी था कि मैंने एडविन को चिल्ला-चिल्लाकर बुलाना शुरू कर दिया, उसी एडविन को जिसकी मैंने पहले सदा अवहेलना की थी।

परलोक में हृदय की पुकार कभी खाली नहीं जाती। मेरी प्रसन्नता का उस समय कोई ठिकाना नहीं रहा, जब मैंने श्री एडविन को आते देखा। मैंने तुरन्त उनसे अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमा याचना की। उन्होंने एक मुस्कुराहट से मेरे उद्दण्डतापूर्ण व्यवहार के लिए मुझे क्षमा कर दिया। श्री एडविन ने तब मुझे कुछ ऐसी बातें बताईं, जिनको आचरण में लाने से मेरा जीवन ऊँचा उठ सकता था।

जब एडविन चले गए, तब मैंने यह अनुभव किया कि मेरे कमरे में पहले जैसा अंधेरा नहीं था। मेरे कपड़े तब पहले की तरह भद्दे नहीं थे। मुझे इस परिवर्तन से अपनी त्रुटियों का ज्ञान हुआ और ऊँचा उठने की प्रेरणा भी मिली, क्योंकि तब तक जो कुछ भी मैंने सहा, उसका मैं ही एकमात्र कारण था।

जन्म के इलावा अन्ततः मृत्यु ही एकमात्र सार्वभौमिक अनुभव है।
- स्टीवर्ट अलसोप

क्या पढ़ें?

परलोक सम्बन्धी जानकारी हेतु निम्न पुस्तकों का पठन हमारे लिए ज्ञानवर्धक हो सकता है-

1. **Man's Life After Death, Dev Samaj Prakashan, 1977.**
2. देवशास्त्र, खण्ड-4 में परिशिष्ट-मृत्यु और परलोक तत्व के नाम से अन्तिम अध्याय, देव समाज प्रकाशन
3. मुझमें देवजीवन का विकास, अध्याय 48, विज्ञानमूलक दार्शनिक सत्य सिद्धान्त-परलोक के सम्बन्ध में, देव समाज प्रकाशन
4. मनुष्यात्मा के सम्बन्ध में चार महा तत्व, देव समाज प्रकाशन
5. मृत्यु- श्री अरविन्द आश्रम ट्रस्ट, पांडिचेरी, 1982।
6. मृत्यु के बाद- जे.डी.गोयल, हिन्द पॉकेट बुक्स, शाहदरा, दिल्ली 1998
7. **Life After Death, J.P. Vaswani, 2005.**
8. **Life After Life-Raymond A. Moody, Jr., M.D., Harper San Francisco, 2001.**
9. **We are Eternal (What the spirits tell me about life after death) Robert Brown, Warner Books, New York, 2003.**
10. **Talking to Heavan (A medium's message of life after death)- James Van Praagh, A signet Book, 1999.**
11. **The afterlife is real (True stories of near death experiences) Theresa Cheung, Simon & Schuster, London, 2013.**
12. **Spirit Guides (Contact your invisible helpers) Richord Webster, Lle wellyn Publications, Minnesota, 2017.**
13. **After we die, what then? George W. Meek, Occult India Publications, New Delhi, 1991.**
14. **Life after Death - Neville Randam, Robert Hale Limited, 1975.**

Six feet of earth makes us all one size.

- Italian Proverb

15. **Life after Death-Mary T. Browne, The Random House Publishing Group, New York, 1994.**

16. **The Laws of the Spirit World, Vol I to IV, Khorshed and Rumi R. Bhavnagri,Mumbai, 1995.**

17. **Celebrating Death - Dr. Jonn Mumford, New Age Books, New Delhi, 1999.**

18. **Light after Death - Alan Bryson, Sterling Publishers Pvt. Ltd., New Delhi, 1999.**

19. **Life after Death - Erica Simon, Sahni Publications, Delhi, 2001.**

20. **Conversations with the other side, Sylvia Browne, Hay House, Inc., 2002.**

21. परलोक - सच्चाई की रोशनी में, भगवान् देवात्मा मेमोरियल फाउण्डेशन, चण्डीगढ़, 2011 ।

22. परलोक सन्देश, भाग-7, सत्य धर्म बोध मिशन, रुड़की, 2007 ।

नोट- उपर्युक्त पुस्तकें देवाश्रम, रुड़की में उपलब्ध हैं। वहाँ से पढ़ने हेतु ली जा सकती हैं।

- सम्पादक

हज़रत उमर बहुत बड़े ख़लीफ़ा थे। वह शाही नौकरी में बड़े पद पर थे। राज दरबार में उनका बहुत सम्मान था। एक दिन किसी ने कहा, ''हजूर! आप इतने बड़े पद पर हैं, पर वेतन तो आप अपने एक छोटे कर्मचारी के बराबर ही लेते हैं। यह क्यों? आपको अधिक वेतन लेना चाहिए। ख़लीफ़ा ने कहा, दोस्त! छोटे कर्मचारी का और मेरा पेट बराबर है। पेट में कोई अन्तर नहीं है। पद में अन्तर अवश्य है। पेट तो जितना उसका है, उतना ही मैं खाता हूँ। मैं उससे दस बीस गुणा नहीं खाता। फिर दस बीस गुणा वेतन क्यों लूँ?'

छः फुट ज़मीन का टुकड़ा हम सबका आकार एक कर देता है।

- इटालियन कहावत

What is death?

What is death? Death is truly a friend, death is not an enemy. Imagine what would happen if there were no death. If no plant died and no animal died and no man died since the emergence of life on earth, what a mess we would have been in today! If every seed grew into a tree and every young of an animal grew to maturity, we would have to find living space over forests of huge trees and over thick layers of mosquitoes and wasps. Death comes as a release to the sick, the tired, the worn-out body, the body that has no energy left to participate in the joy of work, the body whose limbs are aching with pain, whose organs have become weak, the body that can make no contribution to the life of humanity. The soul that dwells within such a body regards it as prison and he turns to death for release from the prison of such a body.

Death is truly a friend and I would wish every one of you to cultivate friendship with death. Death is coming closer to us with the passing of each day. Once we have made friendship with death, we shall not be afraid of death, but in the face of death we shall continue to smile.

What is death? Death is a bridge! Yes, death is a bridge between the physical world and the astral world. When death comes, we leave the physical world and pass over the bridge to enter the astral world, which is a better, nobler, richer, more beautiful, more radiant world.

What is death? Death is a door! Death is a door which leads from one room to another. Our dear ones who have passed away, are not dead. They have but moved on through the door of death to another world. There they await our coming. My revered mother said to me more than once, " I am not afraid of death, for half of my relatives are here and

The life of the dead consists in being present in the minds of living.

- Cicero

half of them are there. When I make the transition, I will not be alone, I will be in the midst of dear ones."

Let us take with ourselves the thought that death is a door, death is a bridge between the physical world and the astral world.

So let each day of our earth-life be a day of preparation. Prepare! Prepare! This is the one word which our dear ones on the other side wish to say to us. Prepare! Prepare! For they find us chasing things which, to them, are no better than shadow-shapes. They find us running after money, trying to gather lakhs and crores of rupees, not a single paisa of which we will be allowed to carry with ourselves into the other world. They find us running after pleasures and sense-enjoyments, after name and fame, greatness and power. These are all shadows. So they ask us to open our eyes, to wake up from the slumber of the senses and the mind and prepare for the inevitable journey.

Extracts from 'Life After Death'by Sadhu J.P. Vaswani

If a rain drop from the sky, is caught by clean hands it is pure enough for drinking. If it falls in the gutter its value drops so much that it can't be used even for washing your feet. If it falls on a hot surface, it will evaporate. If it falls on a lotus leaf, it shines like a pearl and finally if it falls on an oyster, it becomes a pearl. The drop is the same, but its existence and worth depends on whom it is associated with.

Always be associated with people, who are good at heart. You will experience your own inner transformation.

Death knocks impartially at the door of the poor man's shop and the prince's palace.

- Horace

परलोक के विषय में देवात्मा की शिक्षा

नेचर में विकास का नियम काम कर रहा है और उसके कारण विविध प्रकार के अस्तित्व पहले से धीरे-धीरे बेहतर हो रहे हैं और इसी नियम की यह माँग है कि स्थूल शरीर के छोड़ने पर मनुष्य का बिलकुल ख़ात्मा नहीं हो सकता और न ही ख़ात्मा होना चाहिए। नेचर के किसी कानून का हमेशा जारी रहना नेचर का एक बुनियादी सिद्धान्त है और कोई बुद्धिमान मनुष्य नेचर को यह आज्ञा नहीं दे सकता कि तुम यहाँ तक विकास करोगी, इससे आगे तुम्हारा विकास का रास्ता बन्द है या इस दुनिया से परे तुम्हारा यह विकास का नियम काम नहीं करेगा।

नेचर के अन्दर उसके नियम का सदा जारी रहना एक सच्ची घटना है। धरती का गुरुत्व आकर्षण नेचर का एक अटल नियम है। इसी अटल नियम की सच्चाई की बिनाह पर वैज्ञानिकों ने कहा था कि हमारे सौर्य मण्डल में जो ग्रह मालूम हो चुके हैं, उनके अतिरिक्त एक और ग्रह होना चाहिए कि जो बाकी ग्रहों की चाल पर अपना असर डाल रहा है। यह जानने के बाद कि हमारे सौरमंडल में एक और ग्रह कहीं वर्तमान है, जो अपने आकर्षण से यह गड़बड़ मचा रहा है, 1846 में गलेलियो ने अपनी दूरबीन के द्वारा आसमान की ओर देखा, तो उसको वह ग्रह नज़र आ गया, जिसका नाम नेपचुन है और जो सूर्य से 4 अरब 50 करोड़ किलोमीटर दूर है। वह एक बड़ी दूरबीन के बगैर नज़र नहीं आता। वह हमारी धरती से बहुत बड़ा है।

इसी प्रकार नेचर में विकास के महान नियम के सदा जारी रहने की वास्तविकता को जानने के पश्चात् कोई भी बुद्धिमान मनुष्य यह कह सकता है और तर्क के सिद्धान्त के अनुसार यह प्रकाश कर सकता है कि हमारे स्थूल सौर्य मंडल की तुलना में एक श्रेष्ठ प्रकार का और सौर्य मंडल है। और हमारी स्थूल धरती की तुलना में श्रेष्ठ प्रकार की धरती और हमारी दुनिया से बेहतर प्रकार के मनुष्यों, पशुओं और पौधों से आबाद एक श्रेष्ठ प्रकार की दुनिया कहीं न कहीं अवश्य होनी चाहिए।

हम कई प्रकार की घटनाओं और साक्षियों से इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि हमारी धरती से श्रेष्ठ प्रकार की धरती या सूक्ष्म धरती अवश्य वर्तमान है। प्रत्येक मनुष्य, पशु और पौधों के जीवन उसके स्थूल शरीर के ख़त्म हो जाने के साथ ही ख़त्म नहीं हो जाते, बलिक बहुत से अस्तित्व मृत्यु के बाद सूक्ष्म शरीर ग्रहण करके अनुकूल हालात के मिलने पर वर्तमान रहते हैं। मृत्यु के बाद आत्माओं का सूक्ष्म शरीर ग्रहण करके वर्तमान रहना, न केवल तर्क के सिद्धान्त के पूर्णतः अनुकूल है। बल्कि हज़ारों

Death has but one terror- that it has no tomorrow.

- Eric Hoffer

वर्षों से अच्छे और बुरे आत्मा प्रत्येक देश में अपनी वर्तमानता का प्रमाण देते रहते हैं और वह इस दुनिया के मनुष्यों पर आवेश करके अपने विचारों का प्रकाश करते रहते हैं।

सूक्ष्म शरीर किस प्रकार बनता है?

मनुष्य का आत्मा स्थूल शरीर छोड़ने के बाद अनुकूल हालात में सूक्ष्म शरीर बनाता है। जब बच्चा अपने पूरे अंगों का शरीर लेकर इस दुनिया में पैदा होता है, तो वह अपनी माँ के दूध को पीकर केवल अपने स्थूल शरीर की उन्नति और उसके विकास के लिए ही स्थूल मसाला तैयार करने की शक्ति रखता है, परन्तु धीरे-धीरे यह शक्ति बढ़ती जाती है और कुछ समय के बाद उसका आत्मा जिस प्रकार अपने स्थूल शरीर के बढ़ाने के लिए स्थूल मसाला बनाता है, वैसे ही वह साथ-साथ ही स्थूल मसाले में से सूक्ष्म मसाला बनाने के योग्य भी हो जाता है। आत्मा इस प्रकार का सूक्ष्म मसाला शरीर के प्रत्येक अंग में बनाता है और यह सब सूक्ष्म मसाला आगे के इस्तेमाल के लिए तैयार किया जाता है और जब ऐसा समय आता है कि आत्मा इस स्थूल शरीर को जीवित नहीं रख सकता, तब वह स्थूल शरीर से सूक्ष्म मसाले को निकालता है। जबकि किसी प्रकार की कोई दुर्घटना न हो, यह सूक्ष्म मसाला सिर की ओर बाहर निकलता है और उसके पास इकट्ठा होता रहता है, आखिरकार इस सूक्ष्म मसाले से आत्मा अपना सूक्ष्म शरीर तैयार कर लेता है जोकि उसके पहले शरीर के नमूने का और उसकी शक्ल से मिलता जुलता और कद का होता है और होश में आकर आत्मा अपने इस सूक्ष्म शरीर के साथ अपना पहले जैसा परन्तु नया जीवन आरम्भ कर देता है।

अपने सूक्ष्म शरीर के साथ आत्मा कहाँ रहता है?

इस सूक्ष्म शरीर के बना चुकने के बाद आत्मा या तो इसी धरती के निकट रहता है परन्तु केवल उस अवस्था में, जबकि उसका शरीर सूक्ष्म धरती पर अपने भारी शरीर के कारण ऊपर पहुँचने के अयोग्य हो। यह सूक्ष्म धरती नेचर के विकास के सिलसिले में उस सूक्ष्म सौर्य मंडल का एक भाग है, जो हमारे स्थूल सौर्य मंडल से धीरे-धीरे तैयार हुआ है। स्थूल धरती से बँधे हुए नीच सूक्ष्म आत्मा इसी स्थूल धरती पर रहते हैं और इस दुनिया के मनुष्यों के भोजन में से जो सूक्ष्म कण निकलते रहते हैं, वह उन पर गुज़ारा करते हैं और बहुत ही दुखिया जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु जो आत्मा कुछ श्रेष्ठ प्रकार का और बहुत हल्का सूक्ष्म शरीर तैयार करने के योग्य होते हैं, वह अपनी-अपनी

मृत्यु का एक ही आतंक है- इसके पास कल नहीं होता।
- एरिक होफर

अवस्था के अनुसार ऊँचे से ऊँचे स्थानों में पहुँचने और वहाँ की श्रेष्ठ से श्रेष्ठ बरकतों को प्राप्त करने के योग्य होते हैं। जितने किसी आत्मा के उच्च से उच्च भाव और विचार और जितना उच्च जीवन होता है, उतना ही वह मृत्यु के बाद उच्च से उच्च परलोक के विभागों में पहुँचने के योग्य होता है।

मृत्यु के बाद आत्माओं ने किस प्रकार जीवित मनुष्यों तक अपने विचार पहुँचाने आरम्भ किए?

जब तक मनुष्य की मानसिक शक्तियाँ इस क़दर विकसित नहीं हुईं थी कि वह तर्क के सिद्धान्तों या नेचर के नियमों को जो वर्तमान विज्ञान ने मालूम किए हैं, समझ सकें, तब तक वह अपने आप यह नहीं जान सकते थे कि विशेष-विशेष हालात में मरने के बाद भी आत्मा अपने सूक्ष्म शरीरों के साथ स्थिति करते हैं, परन्तु मरे हुए मनुष्यों में से कुछ व्यक्तियों में ऐसी शक्तियाँ पैदा हुईं कि जिनके द्वारा वह अपने विचार धरती पर इन जीवित मनुष्यों तक पहुँचाने के योग्य हुए और उन्होंने अपनी वर्तमानता का उनको पूरा-पूरा विश्वास कराने के तरीके ग्रहण किए, यद्यपि उनका इस प्रकार अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाना बहुत सी अवस्थाओं में अपनी नीच इच्छाओं की तृप्ति के लिए होता था। उन्होंने मालूम किया कि जीवित मनुष्यों में कितने ही ऐसे जन हैं कि जिनके दिमागों को वह अपने काबू में कर सकते हैं, इसलिए उन्होंने ऐसे लोगों के दिमागों पर अधिकार करके उनके द्वारा जीवित मनुष्यों तक अपने विचार पहुँचाने आरम्भ किए। जितने साधन अब तक आत्माओं के अस्तित्व के जानने के सम्बन्ध में मालूम किए गए हैं, उनमें से यह तरीका सबसे पहला है। इस विश्वास के हो जाने पर कि मरने के बाद आत्मा सूक्ष्म शरीरों में जीवित रहते हैं, हिन्दुओं के अन्दर श्राद्धों का रिवाज़ हुआ, जिनमें वह अपने मरे हुए बुजुर्गों को याद करके उनके खाने और पहनने की विविध वस्तुएं दान करने लगे और इसी विश्वास के कारण बौद्धों और जैनों ने अपने बुजुर्गों की पूजा और ईसाइयों और मुसलमानों में पीरों और पैगम्बरों की पूजा जारी हुई।

आत्माओं को देखने और उनकी आवाज़ें सुनने वाले मीडियम (मध्यवर्ती)

धीरे-धीरे कुछ मनुष्यों में इस प्रकार की शक्तियाँ विकसित हुईं कि जिनसे वह आत्माओं के सूक्ष्म शरीरों को देखने और उनकी आवाज़ें सुनने के योग्य हुए और उनके द्वारा परलोक की दुनिया के सम्बन्ध में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ।

To die without fear of death is a desirable death.

- Seneca

लिखने वाले मीडियम (मध्यवर्ती)

फिर जब विद्या प्राप्ति का युग आया और लोग पढ़ने लिखने लग गए तो कितने ही आत्माओं ने जीवित मनुष्यों के हाथों पर अधिकार करके उनके द्वारा अपने संवाद लिखवाने आरम्भ किए। इन संवादों के लिखने वालों ने यह महसूस किया कि यह संवाद न उनके अपने विचारों का नतीजा हैं और न ही उनकी अपनी लिखावट में हैं और उनमें बहुत सी ऐसी बातें बतलाई जाती रही हैं जिनका इन मीडियम लोगों को स्वप्न में भी ख़्याल नहीं था। इन संवादों में ऐसी घटनाएं बताई गई हैं कि जो पड़ताल करने पर पूर्णत: सत्य प्रमाणित हुई हैं। जैसे एक जन अपना बहुत सा धन या ज़ेवर आदि धरती में दबाकर मर जाता है। उसके बेटे को इसका कुछ पता नहीं। परन्तु मीडियम के द्वारा उसके पिता का आत्मा यह संवाद देता है कि मेरा धन अमुक जगह अमुक कमरे में दबा हुआ है, आप उसे वहाँ से निकाल लें। वह जगह खोदी जाती है और वहाँ से सचमुच वह धन और ज़ेवर आदि निकल आता है।

इसी प्रकार हमारे परलोक वासी राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद के जीवन की यह घटना है जो उनके प्राईवेट सेक्रेटरी ने उनके बारे में लिखी थी। परलोकवासी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जब इस दुनिया में जीवित थे, तब परलोकवासी गाँधी जी ने उनके हाथ पर अधिकार करके एक संवाद लिखवाया था, जो गाँधी की अपनी लिखावट से मिलता जुलता था। यह क्या संवाद था, इसको डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने किसी को नहीं बताया।

इसी प्रकार से और कितने ही संवाद सच्चे प्रमाणित हुए हैं। इन संवादों में किसी प्रकार के धोखे की कोई संभावना नहीं थी। इसमें कोई शक नहीं कि बहुत से मीडियम ऐसे होते हैं, जो लोगों को ठगने के लिए बहुत से झूठ घड़ लेते हैं और बहुत से आत्मा भी ऐसे हैं कि जो अपनी नीच इच्छाओं की तृप्ति के लिए और लोगों से भेंट पूजा लेने के लिए अपने सम्बन्ध में बहुत सी झूठी बातें बताते हैं। परन्तु इससे यह नतीजा नहीं निकलता कि सब मीडियम और उनके द्वारा बताए हुए सारे संवाद झूठे होते हैं। जिस प्रकार बाज़ार में कितने ही खोटे सिक्के, जाली नोट, झूठी रजिस्ट्रीयों आदि के होते हुए भी हम सब सिक्कों, नोटों और रजिस्ट्रीयों आदि को झूठा नहीं कह सकते। इसलिए मरने के बाद आत्माओं के सूक्ष्म शरीर ग्रहण करके कायम रहने के सम्बन्ध में जो सच्ची घटनाएं दी गई हैं और जो कड़ी से कड़ी परीक्षाओं से ठीक प्रमाणित हुई हैं, उनसे इन्कार नहीं किया जा सकता।

बिना मौत के डर के मरना सर्वोत्तम मृत्यु है।

– सेनेका

देवात्मा के निजी प्रयोग

❖ कई एक परलोकवासी उच्च आत्मा जो समय-समय में गुप्त रूप से मेरी एक व दूसरी सहायता किया करते थे, और जो मुझसे मिलने जुलने और बातचीत करने के बहुत इच्छुक थे, उन्हें अपनी इस शुभ इच्छा के पूरा करने के लिए एक अच्छा अवसर मिल गया। मेरे पारिवारिक जनों में से एक लड़की में ''मीडियम'' विषयक विशेष शक्ति उत्पन्न हो गई। मेरे एक सेवक जो इस विषय में कुछ लगाव रखते थे, एक ऐसी अंगूठी ले आए, कि जिसके स्याह भाग पर तेल की बूँद रखने से उसके भीतर परलोकवासी सूक्ष्म शरीरधारी आत्मा मीडियम की विशेष शक्ति के द्वारा अपने रूप का प्रतिबिम्ब डाल सकते थे। यह अंगूठी मीडियम लड़की को दी गई, और वह उसके द्वारा उनके प्रतिबिम्ब देखने लगी व उनकी आवाज़ भी सुनने लगी। उनके द्वारा अधिकृत होकर उनकी वाणी भी बोलने लगी, और इस प्रकार एक अच्छी हितकर ''मीडियम'' हो गई। मुझे उसकी ख़बर हुई। मैंने उसकी परीक्षा की। बात ठीक निकली। मैं मेलबोर्न के परलोक तत्व प्रकाशक ''हारबिंजर आफ लाइट'' नामक मासिक पत्र को पढ़ा करता था। वह मेरे पास कई सालों से आता था। मैंने परलोक तत्व के विषय में क्रूक्स और वालिस जैसे जगद्विख़्यात वैज्ञानिक जनों की परीक्षा और उनकी शिक्षा का वृतांत भी पढ़ा व सुना हुआ था। मैं इस विषय में बहुत हार्दिक अनुराग रखता था। इस विशेष वांछनीय घटना के पैदा होने से मैं अत्यन्त ख़ुश हुआ। मुझे आशा मिली कि मैं अपने इन परलोकवासी विशेष उच्च सम्बन्धियों के द्वारा मनुष्य तत्व के सम्बन्ध में बहुत कुछ अनुसंधान कर सकूँगा। यह घटना अक्तूबर सन् 1896 में उत्पन्न हुई थी।

❖ तुम अपने प्रिय परलोकवासी सम्बन्धियों को भी स्मरण करके उनके उच्च परिवर्तन, और उनके उच्च जीवन के विकास के लिए मंगल कामना करके उनका भला कर सकते हो, और वह अपनी शुभकामनाओं के द्वारा तुम्हारे हित साधन में सहायक बन सकते हैं। शुभाकांक्षी बनकर दोनों ही एक दूसरे के साथ कैसा मधुर, कैसा सुन्दर और कैसा हितकर सम्बन्ध स्थापन करते हैं। मेरे कितने ही सम्बन्धी जो पहले नीच अवस्था में थे, वह मेरी मंगलकामनाओं के द्वारा अब उच्च अवस्था को पाकर उच्च लोकों में पहुँच गए हैं। इस सहाय के भिन्न कई परलोकवासी सम्बन्धी यहाँ पहुँचकर भी अपने किसी प्रिय सम्बन्धी की बीमारी और दुःखी अवस्था में गुप्त रूप से सहायता करते हैं। कैसा मनोहर दृश्य! वह हमारी सहायता करते हैं और हम उनकी सहायता करते हैं। हम उनके लिए सेवाकारी बनते हैं और वह हमारे लिए सेवाकारी बनते हैं।

A good man has more hope in his death, than a wicked man in his life.

-Thomas H. Fuller

अपने परलोकवासी सम्बन्धियों से सम्पर्क

मेरे दादा का नाम श्रीमान् रामजियावन अग्निहोत्री था। वह संसार में रहकर धर्म को ही मुख्य रखते थे। इसीलिए धर्म को मुख्य रखकर ही वह अपना सारा जीवन व्यतीत करते थे। उनके भीतर कई असाधारण सात्विक गुण थे। उनका 72 वर्ष की आयु में सन 1840 के लगभग देहान्त हो गया था। मेरे दादा जब अपने स्थूल शरीर को छोड़कर सूक्ष्म शरीर ग्रहण कर चुके, तो उन्हें कुछ सूक्ष्म शरीरधारी योगी मिले। इन योगियों के साथ वह परलोक में पहुँचे और वहाँ उन्हीं के साथ वास करने लगे। योग का नाम मेरे दादा ने पहले ही सुना हुआ था, और वह प्रायः हर एक हिन्दु की न्याईं उस समय के (और बहुत कुछ इस समय के भी) संस्कार के अनुसार उसकी बहुत बड़ी महानता अनुभव करते थे। इन योगियों की संगत से उनके भीतर यह महानता और भी बढ़ गई, और उनकी शिक्षा के अनुसार उनके भीतर यह विश्वास दृढ़ हो गया कि योगाभ्यास से बढ़कर और कोई धर्म साधन नहीं है, और आत्मा के लिए शाँति और परमानन्द लाभ करने का यही एक मात्र मुख्य साधन है। इस गाढ़ विश्वास और अपनी सरलता के अनुसार इन्होंने योगी बनने की इच्छा की, और योगी बन गए।

यह बेचारे उस समय यह नहीं जानते थे कि जिस योग की वह बाल्यकाल से महिमा सुनते आए हैं, वह योग चित्त की एकाग्रता के साधन में चाहे कैसी ही सहाय कर सकता हो, परन्तु उससे आत्मा के जीवन का कुछ कल्याण नहीं हो सकता और केवल यही नहीं कि इस प्रकार का योग आत्मा के जीवन के लिए कुछ कल्याणकारी नहीं, किन्तु बहुत हानिकारक है। क्योंकि एक ओर जहाँ उससे आत्मा के भीतर से किसी उच्च गतिदायक शक्ति का विकास नहीं होता, वहाँ दूसरी ओर विश्वगत विविध सम्बन्धियों के सम्बन्ध में हितकर न बनने और आवश्यक कर्त्तव्य कर्मों को छोड़कर निकम्मा बन जाने से धीरे-धीरे जीवनी शक्ति क्षय होती जाती है, और वह अपने तेज़ और बल को बढ़ाकर और उच्च शक्तियों में विकास पाकर जितने काल तक रह सकती थी, उतने काल नहीं रह सकती। इस प्रकार उसकी आयु दिनों दिन क्षीण होती जाती है। और यदि उसका इस प्रकार की महा हानिकारक अवस्था से उद्धार न हो, तो ऐसा जन योगी कहलाकर भी निर्बल और निस्तेज होते-होते एक दिन बिलकुल नष्ट हो जाता है। मेरे दादा के साथ भी यही हुआ। मैं उनके प्रति बहुत गाढ़ श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव रखता था, और इस कृतज्ञता विषयक ऋण के परिशोध करने के लिए अपने दैनिक साधनों में उनके लिए मंगल कामनाएं किया करता था। वर्षों तक यह मंगलकामनाएं

एक शैतान को अपने जीवन से अधिक एक नेक इन्सान को
अपनी मौत से ज़्यादा उम्मीद होती है।

– थॉमस बी. फुलर

जारी रहीं, उनका पता लगा, और मेरी परलोकगता पत्नी श्रीमती लीलावती जी ने उन तक पहुँचना आरम्भ किया। वह मेरा हाल सुनकर प्रसन्न हुए, और श्रीमती लीलावती जी की प्रेरणा के अनुसार सन 1898 ई. में एक दिन मेरे पास आए।

एक मीडियम अर्थात् मध्यवर्ती के द्वारा बातचीत आरम्भ हुई। मैं बहुत डरता था कि कहीं मैं कोई ऐसी बात न कहूँ कि जो उनके संस्कार प्राप्त किसी विश्वास पर इतना आघात लगाए कि उनका हृदय मुझसे दूर हो जाए और मैं उनका शुभ साधन न कर सकूँ। इसीलिए जिस प्रकार एक चिकित्सक किसी बीमार के दिल को अपने हाथ में रखकर धीरे-धीरे एक व दूसरी दवा के द्वारा उसे आरोग्य करने की चेष्टा करता है, वैसे ही मैं भी बीच-बीच में कुछ देर के लिए उनसे मिलकर और धीरे-धीरे उनके हृदय को जीवन विषयक एक-एक प्रकृत तत्व और शुभ की ओर फेरने लगा। नई ज्योति और अनुराग शक्ति को पाकर उनका आत्मा विकसित होने लगा, और उसके साथ-साथ उनका सूक्ष्म शरीर भी जो पहले बहुत निस्तेज और निर्बल हो चुका था, धीरे-धीरे सतेज और सबल होने लगा। उनके लिए जीवन के विकास का पथ खुल गया। वह थोड़े ही काल में अपने लोक से निकल कर उससे ऊपर के लोक में चले गए, और फिर कुछ काल के अनन्तर उससे भी ऊपर के लोक में, और फिर उससे भी ऊपर के लोक में और इस प्रकार अब वह एक ऐसे उच्च लोक में वास करते हैं कि जहाँ पहुँचने से उनके लिए जीवन के विकास का पथ सदा के लिए खुल गया है।

परलोकवासी पिता-माता के साथ मेरा धर्मगत सम्बन्ध

मैं अभी 23 वर्ष का था कि मेरे पिता ने यहाँ का स्थूल शरीर छोड़ दिया। मेरा माता ने मेरे पिता के देहान्त के 12 वर्ष के अनन्तर यहाँ से प्रस्थान किया। दोनों ही सूक्ष्म देह ग्रहण करके अपनी-अपनी अवस्था के अनुसार परलोक सम्बन्धी किसी एक व दूसरे लोक में पहुँच गए। मेरे माता-पिता अपनी आध्यात्मिक अवस्था के विचार से भिन्न-भिन्न लोकों में रहते थे। उन्हें एक दूसरे का कुछ पता न था। उनका सम्बन्ध एक दूसरे से कट चुका था। जब तक प्रकृत धर्मगत किसी के साथ सम्बन्ध स्थापन न हो, तब तक आत्माओं का सम्बन्ध स्थाई नहीं होता, और नहीं हो सकता। वह मेरे साथ धर्मगत कोई उच्च सम्बन्ध न रखते थे। इसीलिए वह स्वभावत: मुझे भी धीरे-धीरे भूल गए। और इस प्रकार उन्होंने अपनी ओर से मेरे साथ भी कोई सम्बन्ध न रखा। परन्तु यद्यपि उन्होंने मुझे भुला दिया, और मेरे साथ अपनी ओर से कोई सम्बन्ध न रखा, तथापि मैं अपने धर्म जीवन की अवस्था के विचार से उन्हें नहीं भूल सका।

To dead don't die. They look on and help.

-D.H. lawrence

मैं इस पृथ्वी में उनसे बहुत दूर रहकर भी उन्हें नहीं भूला। और अपने दैनिक साधनों में उनको स्मरण करके अपनी आन्तरिक शक्ति से उनके लिए मंगल कामनाएं करता रहा। मेरी शक्ति जो उच्च और शुभकर थी, वह शुभकर फल उत्पन्न करने के बिना नहीं रह सकती थी, और इसलिए धीरे-धीरे उस शक्ति ने अपना कार्य किया। ऐसी घटनाएं पैदा हुई, जिनके द्वारा सन् 1897 ई. में मुझे उन दोनों का पता लग गया।

मेरी धर्म शक्ति के बल से धीरे-धीरे वह दोनों ही मेरी ओर आकृष्ट हुए। मैंने आप और अपने परलोकवासी धर्म सम्बन्धियों के द्वारा उन्हें प्रकृत धर्म विषयक ज्ञान देने और कल्पना मूलक सब धर्म मतों और साधनों आदि से निकालकर उनके आत्माओं को विनाश से बचाने और उन्नत करके लिए विविध प्रकार के यत्न प्रारम्भ किए कि जिनसे आख़िरकार उनकी उन्नति और भलाई का पथ खुल गया। उन्होंने मुझे पहचाना और मेरे साथ अपने सम्बन्ध की महिमा अनुभव की। वह मेरे द्वारा एक दूसरे से भी धर्म सूत्रों से जुड़कर फिर परस्पर सम्बन्ध स्थापन करने के योग्य हुए। तब से उन्होंने इन कई वर्षों के अनन्तर निश्चय उन्नति लाभ की है, और वह नीचे के लोकों से निकलकर अब अपेक्षाकृत ऊपर के लोकों में वास करते हैं। अब वह मेरे हित की कामना करते हैं और मैं उनके लिए मंगलकामना करता हूँ।

परलोक के सम्बन्धियों को,
हम नहीं बिसरायेंगे;
उनके संग कल्याण कर,
सम्बन्ध अपना बढ़ायेंगे।

मृतक मरते नहीं हैं। वे हमें देखते हैं व मदद भी करते हैं।
- डी. एच. लॉरेन्स

मरणोपरान्त शरीरदान

भारतीय संस्कृति में दान की बड़ी महिमा गाई गई है। अन्न, वस्त्र, गो, भू, अंग (रक्त, नेत्र, गुर्दे आदि), श्रम, समय, ज्ञान, विद्या इत्यादि दान की अनेक घटनाएं हम समय-समय पर प्रायः सुनते और देखते रहते हैं।

पौराणिक काल में ऋषि दधीचि तथा महाराज शिवि के द्वारा अपने जीते जी शरीरदान की घटनाओं के विषय में भी हमने पढ़ा है। निश्चय ही शरीरदान का यह कार्य अत्यन्त विस्मयकारी, शौर्यपूर्ण एवं वन्दनीय है, जो उन्होंने धर्म की रक्षा एवं लोक कल्याण हेतु किया था।

किन्तु, मरणोपरान्त दान किये गए शरीर का प्रयोग आधुनिक आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में अनुसन्धान के लिए किया जाता है। इससे ज्ञान की वृद्धि एवं प्रसार होता है, जिसके फलस्वरूप अन्ततः न जानें कितने लोगों की प्राण रक्षा होती है।

मरणोपरान्त शरीरदान की घटना मैंने पहली बार एस.पी. कनल 'काका जी' (देव समाज के सुविख्यात पुरोधा) के सन्दर्भ में सुनी और पढ़ी थी। विश्व इतिहास में ऐसी घटनाएं बहुत कम मिलती हैं। मैं उनके प्रति श्रद्धा से नत-मस्तक हो गया और इस सम्बन्ध में मुझे निम्न सूक्ति याद आई-

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिंद शरीरम्।।

अर्थात् दूसरों के उपकार के लिए वृक्ष फल देते हैं, दूसरों के उपकार के लिए नदियाँ बहती हैं, दूसरों के उपकार के लिए गायें दूध देती हैं और दूसरों के उपकार के लिए ही यह शरीर है। सारांश यह है कि प्रकृति में हर कोई अस्तित्व दूसरों के उपकार के लिए ही कार्य कर रहा है।

इसलिए, मन में आया- क्यों न 'काका जी' के चरण चिन्हों पर चलकर जीवन को सफल बनाया जाय! और, एक प्रख्यात मेडीकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के शरीर रचना विज्ञान विभाग से मरणोपरान्त शरीरदान सम्बन्धी वसीयत का प्रपत्र मंगवा लिया।

परिवार में इसका घोर विरोध हुआ। कारण? वही कि ऐसी परम्परा नहीं है। तर्क-वितर्क शुरू हुए-

'यदि अभी तक ऐसी कोई परम्परा नहीं है, तब कोई तो किसी अच्छी परम्परा

Our last garment is made without pockets.

- Italian proverb

की कभी शुरूआत करेगा ही।'

'नहीं, यह शास्त्र विरुद्ध है।'

' 'शास्त्र दिखाओ। कहाँ लिखा है उसमें?' सब अवाक् थे।

आख़िरकार, मैंने 'कल्याण' (सनातन धर्म की प्रमाणिक एवं प्रतिष्ठित पत्रिका) के सम्पादकीय विभाग को इस सम्बन्ध में मार्गदर्शन करने हेतु लिखा। क़रीब दो महीने के बाद उत्तर आया-

'यद्यपि लोकोपकार की दृष्टि से ऐसा बहुत उपयोगी लगता है, परन्तु शास्त्रीय दृष्टि से यह समझ में आता है कि जीवितावस्था में अपने अंगों या शरीर का दान करना बड़े महत्त्व का है। कारण, पूर्व में भी महाराज शिवि तथा ऋषि दधीचि आदि ने भी अपने शरीर का दान किया। परन्तु, मृत्यु के बाद शरीर के अंगों का दान करना कहाँ तक उचित है, यह बात शंकास्पद है। कारण, हमने सुना है कि मृत्यु के बाद शास्त्रीय विधि से अन्त्येष्टि करने के पूर्व जो अंग निकाल लिये जाते हैं, दूसरे जन्म में वह व्यक्ति उस अंग से हीन होता है, यद्यपि इस बात का मेरे पास कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। मुझे जितनी जानकारी है, वह मैंने पत्र में लिख दिया है।'

ऐसी स्थिति में, अपने विवेक का प्रयोग करने के अलावा कोई चारा नहीं था। अब, मरणोपरान्त शरीरदान के विषय में शास्त्र मौन है। तब, कही-सुनी बातों में कुछ दम अगर है भी, तो अधिक से अधिक क्या होगा? दूसरे जन्म में मुझे शरीर नहीं मिलेगा, अर्थात् मैं प्रेत योनि में चला जाऊँगा। सो कोई बात नहीं, मुझे स्वीकार्य है। वहाँ पर भी मैं अन्य प्रेतात्माओं के आत्मिक उत्थान के कार्य में लग जाऊँगा। उनकी सेवा करूँगा। इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है?

सोचता हूँ, जीवितवस्था में यह शरीर किसी के काम नहीं आ सका, तो कम से कम मरने के बाद चिकित्सा विज्ञान के अन्तर्गत ज्ञान की वृद्धि में ही काम आ जावेगा, तो यह भी मानवता के प्रति एक बड़ी सेवा होगी और मैं धन्य हो जाऊँगा। इस प्रकार, मैं मानसिक रूप से पूर्णतया तैयार हो गया और पारिवारिक विरोध के बावज़ूद मैंने तत्सम्बन्धी वसीयत लिख दी।

इस सम्बन्ध में, मैं अन्य लोगों से भी करबद्ध अपील करता हूँ कि मरणोपरान्त अपना शरीर दान करके पुण्य के भागी बनें।

- ईश्वर दत्त शर्मा

हमारा आखिरी परिधान जेब के बिना बनाया गया है।
- इटालियन कहावत

श्राद्ध सभा

जैसा कि पिछले अंक में सूचित किया गया था कि हमारे साथी सेवक श्री सुभाष चन्द्र जी अग्रवाल (पंचकूला) 10 जुलाई 2018 को देहान्त हो गया था। उनके सम्बन्ध में श्राद्ध सभा 22 जुलाई को श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर, सेक्टर-6, पंचकूला के हॉल में रखी गई। श्री नवनीत जी ने बहुत प्रभावशाली ढंग से यह साधन करवाया, जिससे प्राय: 400 जन लाभान्वित हुए। श्रीमान् जवाहरलाल जी, सुशील जी व संजय जी व्यवस्था संभालने, भजन गान आदि में सहायक बने। पारिवारिक जनों के भाव प्रकाश विशेष रूप से हृदयस्पर्शी रहे। परिवार की ओर से श्रीमान जी की याद में 'अटल सत्य' व 'कृतज्ञता' नामक पुस्तिकाओं की 800 प्रतियां वितरित की गईं। परिवार व अन्य जनों की ओर से प्राय: ` 15,700 दानस्वरूप प्राप्त हुए। श्राद्ध सभा से पूर्व आपके निवास पर शुभकामना सम्बन्धी सभाएं रोजना शाम को रखी जाती रहीं, जो मुख्यत: श्रीमान् धर्मसिंह जी चौहान करवाते रहे।

श्राद्ध सभा के अवसर किए गए भाव प्रकाशों का सार नीचे दिया जा रहा है-

मैं बहुत ख़ुशनसीब हूँ जो मुझे ऐसे पिता मिले। उन्होंने मुझे पढ़ाया, लिखाया और इस क़ाबिल बनाया कि मैं एक सार्थक जीवन जी सकूँ। उनका मुझ पर बहुत बड़ा अहसान है। उन्होंने मुझे ज़िन्दगी को जीना सिखाया। उन्होंने सदा ही सबका भला चाहा। भूलकर भी किसी का बुरा नहीं किया। वो हमेशा अपने जीवन में ख़ुश रहते थे। उन्होंने कभी भी किसी भी चीज़ की हमें कमी नहीं होने दी। वो सबको एक जैसा प्यार करते थे। जीवन में जब भी उतार चढ़ाव आए, उन्होंने हमें धैर्य बाँधा। जब भी मेरा मन विचलित होता, उन्होंने मुझे सकारात्मक सोच की शिक्षा दी। उन्होंने आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए भगवान् देवात्मा की शिक्षा ग्रहण की, उसके साथ जीवन व्यतीत किया और हम सबके सामने एक मिसाल कायम की। वो मेरे बहुत बड़े उपकारी हैं। उनके जाने का मुझे आज भी विश्वास नहीं होता। वो मेरे इतने करीब थे कि जाने के बाद भी वो हमारे पास हैं, हमारी सहायता करते हैं। ऐसी उच्च आत्मा के लिए मैं शुभकामना करता हूँ कि उन्हें परलोक में उच्च से उच्च श्रेणी मिले। उनका आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ रहे। उनका शुभ हो! भला हो! उनकी आत्मा चैन के साथ परलोक में वास करे। उनका हित हो! शुभ हो!

– मनीष कुमार (सुपुत्र), पंचकूला

Those who living fill the smallest space, In death have often left the greatest void.

-Walter S. Landor

भाव प्रकाश

भाई साहब मेरा एकमात्र सहारा थे। आप परिवार की छाया थे। आपका यूँ चुपचाप चले जाना, हमसे बिछुड़ जाना, अत्यन्त दु:खदायी है। आपके जाने से परिवार में जो कमी हो गई है, वो कभी पूरी नहीं हो सकती। जो क़ुदरत को मंजूर था, उसके आगे हम बेबस हैं। मुझे सिरसा में रहते हुए पीलिया हो गया, मेरे बचने की कोई आशा न थी। आपको पता चला, आप अपना कारोबार घर-परिवार छोड़कर मेरे पास आ गए। मुझे बचाने में दिन-रात एक कर दिया। 20 दिन में अपनी सेवाओं, उचित डाक्टरी इलाज ढूँढकर व अपनी दुआओं से मुझे पुनः खड़ा कर दिया। मैं उनका यह एहसान कभी नहीं भुला सकता। उनका शुभ हो! उनका उच्च से उच्च लोक में वास हो!

- कृतज्ञ भाव से आपका भाई-सुरेश अग्रवाल (पंचकूला)

मेरे विशेष सम्मान के योग्य मेरे हितकारी, उपकारी, सेवाकारी, रक्षाकारी आदरणीय वीर जी, सत्य देव की जय के साथ मैं आपके शुभ और मंगल की कामना करती हुई आपको प्रणाम करती हूँ।

मालूम ही नहीं था यह दिन देखने और सहने के लिये इतनी ज़ल्दी मिल जाएगा। दो दिन पहले ही दूसरे भाइयों की आयु, मेरी आयु और उनकी अपनी आयु क्या है के बारे में मैंने उनसे चर्चा की। मैंने उनसे कहा-मुझे आपकी ज़रूरत है। आप अपने लिए न सही मेरे लिये और जियेंगे। बोले, ''मैं अभी 85 साल तक जीऊँगा।'' उनको पूर्ण भरोसा था। उनको लगता था मैं योग करता हूँ, सैर करता हूँ, मुझे कुछ नहीं होता। मैं जी सकता हूँ। मेरे भाई बहुत अच्छे सेवाकारी और ईमानदार इन्सान थे। मेरे तो वो खजान्ची भी थे। मुझे भाई के साथ-साथ पिता का स्नेह और दुलार भी देते थे। पिता के जाने के बाद कभी पिता की कमी महसूस नहीं होने दी। मैं भी उनके परिवार से वादा करती हूँ, जहाँ तक सम्भव होगा उनको उनकी कमी महसूस नहीं होने दूँगी। कभी भी इस लोक में मैंने कोई उनके प्रति ग़लती की हो, उसके लिए मुझे क्षमा करें। उनको परलोक में उच्च से उच्च स्थान प्राप्त हो! आप भी हमारे लिए परलोक से शुभकामना करें। अपना स्नेह और आशीर्वाद प्रदान करें। आपका परलोक में शुभ हो!

- श्रीमती सरोज (बहन), (पंचकूला)

मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि जो ऐसे पिता का साया मुझे मिला, जिन्होंने कभी मुझे बहु नहीं समझा, हमेशा बेटी का प्यार दिया। उन्होंने कभी दिखावा नहीं किया। वो

ज़िन्दा होते हुए जो लोग सबसे कम जगह भरते हैं, मृत्यु के उपरान्त वो बड़ा शून्य छोड़ जाते हैं।

- वालटर एस. लैण्डर

जो अन्दर से थे, वही बाहर से थे। जो आध्यात्मिक पूँजी और मूल्य वो हमारे लिए छोड़कर गए हैं, उसके लिए हम हमेशा उनके आभारी रहेंगे। उनके अन्दर दूसरों के लिए बहुत सेवा भाव था। **I would lke to tell you all that when my son was born, he prepared tea for me, early in the morning, when everyone was asleep,** यह सोचकर कि मैं सारी रात से जाग रही हूँ, और मुझे भूख लगी होगी। **He had a heart of gold** (उनका दिल सोने का था) घर में कोई रिश्तेदार आया हो-चाहे मेरा, चाहे मम्मीजी का या चाहे उनका अपना बहन-भाई हो, सबको एक समान प्रेम करते थे। परोपकार के भावों के वो धनी थे। उन्होंने कभी किसी का बुरा नहीं किया, किसी का बुरा सोचा तक नहीं। **It was his aura that everybody used to get attracted towards him** ख़ुद सारी उम्र वो भगवान् देवात्मा की शिक्षा से जुड़े रहे हैं और वो चाहते थे कि हम भी उस शिक्षा से जुड़ें। मेरी कोशिश है कि मैं खुद भी उनकी दी गई शिक्षा से जुड़ सकूँ और अपने बच्चों को भी जोड़ सकूँ। काश, उनकी आत्मा उच्च लोक में वास करे और परलोक में उच्च शक्तियों से उनको सहायता मिले। उनका शुभ हो!

- श्रीमती अमीषा (पुत्रवधू), (पंचकूला)

मेरे आदरणीय पिता जी! आपका शुभ हो! भला हो! हम आपके प्रति मंगलकामना करने के योग्य हो सकें। आपके गुणों को स्मरण कर हमारा मस्तक आपके सम्मुख नतमस्तक होता है। वैसे तो आपके हमारे पर बहुत से उपकार हैं, जिनका वर्णन असम्भव है। लेकिन एक बात जो बार-बार मेरे हृदय को झंझोड़ रही है कि एक बार मुझे पीलिया हो गया। आप मुझे अपने साथ भुच्चोमण्डी ले गए। कोई सुविधा न होते हुए भी आपने अपने हाथों से जूस निकालकर मुझे पिलाया। सैर पर जाने से पहले आप जूस निकालकर जाते। आख़िरकार आपने मुझे ठीक कर दिया। काश! हम आपकी मदद की कद्र कर सकें। जो रास्ता आप जीवन में हमें दिखाना चाहते थे या जिस रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते थे, हम उन नियमों या आदर्शों पर चल सकें, यही आपके लिए सच्ची श्रद्धांजलि है। आपका उच्च लोक में वास हो। हम सभी आपके हित के लिए अपने दिली भावों से मंगलकामना करते हैं। आप भी हमारे लिए शुभकामना करें। आपका हर प्रकार से शुभ हो!

- श्रीमती रेणु (सुपुत्री), बठिण्डा

Everybody wants to go to heaven, but nobody wants to die.
- Joe Louis

आज इस अवसर पर मुझे मौक़ा मिला है कि मैं अपने प्यारे नानाजी के बारे में कुछ शब्द कहूँ। जब वे थे, तब तो उनके बारे में कुछ कह न सकी। वे बहुत ही सच्चे दिल के इन्सान थे। हमें भी हमेशा सच्चाई की राह पर चलने की शिक्षा दी थी। वह हमेशा कहते थे। पढ़ लिख कर बलवान बनो। वह हमेशा ख़ुश रहते थे और अपने में मस्त रहते थे। नानी जी को हर बार रहता था कि कमरा साफ़ हो, सारा सामान अपनी जगह पर हो। पर अगर वो नानाजी को कह देतीं, तो वो कहते कि सब कुछ ठीक है, कुछ नहीं हुआ। उनकी हर आदत अच्छी थी और हमेशा जीवन के बारे में जानकारी देते थे। उनकी याद हमेशा हमारे दिल में रहेगी। परलोक में उनका वास उच्च श्रेणी में हो और वह हमेशा ख़ुश रहें। शुभ हो!

– कु. ऋषिका (दोहती) बुढलाडा,

मेरे नानाजी नेक दिल इंसान थे व दूसरों की मदद को हमेशा तैयार रहते थे। हमें जीवन में आगे बढ़ने व सच्चाई में विश्वास रखने की शिक्षा देते थे। मुझे उनकी एक बात कभी नहीं भूलेगी, वो कहा करते थे कि बेटा श्रवण कुमार जैसे बनो, उन्हें ख़ुशी दो, खूब तरक्की करो, उनका नाम करो। उन्होंने मुझे एक पुस्तक, 'मेरे माता-पिता व मेरे बच्चे' भी उपहार में दी थी। उनका शुभ हो!

– निखिल (दोहता), बुढलाडा

मेरे मामाजी बड़े गुणवान इंसान थे। बिना निजी लाभ के लोगों के काम आना उनका स्वभाव था। वह दयालु हृदय रखते थे। सबको प्यार करने वाली हस्ती थे। अच्छी पुस्तकें पढ़ना व दूसरों को बाँटना उनके व्यक्तित्व का हिस्सा था। आज वो हमारे बीच नहीं रहे, उनके अच्छाइयाँ हमारे हृदयों में ज़िन्दा रहेगी। उनका शुभ हो!

– रोहित (भानजा), आस्ट्रेलिया

Today, we all are here to pay tribute to the depasted soul. I must say that I am blessed by the fortune that I was born in a pious family with he himself as the head. To describe his character, it was pure white serenity, flowing patiently like a river. He was never hysterical always calm, composed and complete in himself. Though he has spent a very less amout of time with me, I still remember each and every deed of kindness

स्वर्ग सभी जाना चाहते हैं, किन्तु मरना कोई नहीं चाहता।
– जो लुइस

done by his majesty for me. His highness never thought anything negative even for those, who are despised. I would like to tell you that I didn't talk to him for a long time thinking that he loved my younger brother more. But as fate would have it, I soon realised the futilily of my mistake and made amends. I am happy for the fact that he died happily not taking the burden of quilt or sorrows. Yes, he was happy and cheerful. His optimistic nature and a positive attitude still inspires me today. Bade papa! you did so much for me, I could never thank you. But today I say-thank you. I love you very, very, very much. I will try to fulfil your expectations and I promise- one day I will be a great man. I am sorry for all the wrong doings done towards you. I pray for you. May you hail in paradise. May your soul rest in peace. May you go to higher and higher levels in Parlok, assissted by good souls. May you achieve the eternity of goodness. I love you. Aapka shubh ho!

- Kshitiz (Grand Son), Panchkula

मेरा पिछले 20 वर्ष से उनसे सम्पर्क था। वो निष्काम सेवा करने वाले प्राणी थे। अहंकार से दूर थे, सभी का हित चाहते थे। जिस संस्था से वो जुड़े थे, उसको इस सबका श्रेय जाता है। ट्रैफिक लाइट में रुको, देखो व चलो का साइन रहता है यानि लाल, पीला व हरा। आप जीवन में ऐसे ही संभल कर चलते थे। मुझे और मेरे साथियों को उनसे बिछुड़ने का गहरा दु:ख है।

– सुरिन्दर कुमार वर्मा (पंचकूला)

लोग कहते हैं– ''होश सँभालने के बाद मैंने फलाना काम शुरू किया या बिज़नेस किया आदि आदि।'' असली होश सँभालना तो तब है, जब तुम इस सत्य को महसूस करो कि ज़िन्दगी तेज़ी से बढ़ती जा रही है और अन्त में वह ख़त्म हो जाएगी। और तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारे पास कितना वक़्त बाक़ी है। तो, जो वक्त तुम्हें मिला है, उसका सदुपयोग करो, अपने होश में आओ और अपने इन्सानी जीवन को सार्थक करो।

The wiseman is never surprised by death, he is always ready to depart.

- Jean de la Fontaine

बाल व्यक्तित्व विकास शिविर

देवाश्रम रुड़की में दिनांक 27 जून से 30 जून 2018 तक 17वां बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का सफल आयोजन हुआ। श्री संदीप जी व श्रीमती मीनाक्षी पुरी जी द्वारा योग व प्राणायाम की कक्षा सम्पन्न हुई। ध्यान का सत्र श्रीमती विनीता भण्डारी जी लेती रहीं। सुश्री अनिता जी व श्रीमती उषा महता जी द्वारा बच्चों को उच्च भाव व संस्कारों के विषय में बताया गया।

डॉ. प्रदीप रस्तोगी जी (डेन्टीस्ट) द्वारा बच्चों को दाँतों की देखभाल व सफ़ाई विषयक ज्ञान दिया गया तथा बच्चों के दाँतों का फ्री चैकअप भी किया गया।

डॉ. संदीप गर्ग (नाक, कान, गला) जी द्वारा बच्चों को कान, नाक व गले की सफ़ाई और देखभाल के विषय में बताया गया एवं विडियो सैशन द्वारा आई.आई.टी. के डॉ. आलोक ने बच्चों को हैल्दी डाइट के विषय में जानकारी दी।

आई.आई.टी. से आये डॉ. विनय शर्मा जी ने बच्चों को सफल होने के लिए बहुत ही ज्ञानवर्धक बातें बताईं। आई.आई.टी. के डॉ. रधावा जी ने बच्चों का ज्ञानवर्धन किया। डॉ. फनीन्द्र मिश्रा जी ने प्रोजक्टर के माध्यम से किसी परिस्थिति में हमारी प्रतिक्रिया कैसी हो? के बारे में समझाया एवं श्री ईश्वर दत्त शर्मा के चुटकलों ने बच्चों का बहुत मनोरंजन किया।

खेल सत्र में निर्दोष खेलों के साथ-साथ एकाग्रता बढ़ाने वाले खेल भी खेले गये। बच्चों हेतु नाश्ते का इन्तजाम श्रीमती शारदा बतरा जी, श्री आदेश जी, श्रीमती राधा जी ने बड़े चाव भाव से किया। श्रीमती सीमा मिश्रा जी सभी कार्यों में सहायक होती रहीं। श्रीमान् वी.के. अग्रवाल जी कुल व्यवस्था देखते रहे। सहायकारियों के आशीर्वाद से व सभी साथियों के सहयोग से शिविर सम्पन्न हुआ। अन्त में बच्चों को सर्टिफिकेट्स व इनाम भी दिया गया। सभी का शुभ हो!

शोक समाचार

शोक का विषय है कि श्रीमती मोहिनी देवी जी सिंघल, मंगलौर जिला हरिद्वार का दिनांक 26 जुलाई 2018 को प्राय: 79 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप हमारी साथी सेविका श्रीमती मनीषा सिंघल जी (रुड़की) की सास माता थीं। आप मृदुभाषी, स्नेही, दयालु व धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! 06 अगस्त, 2018 उनके सम्बन्ध में श्रद्धांजलि सभा में डॉ नवनीत जी ने सारगर्भित उद्बोधन दिया व उनके परलोक के जीवन हेतु शुभकामना करवाई। परिवार की ओर से 'अटल सत्य' नामक पुस्तिका की प्रतियाँ बँटवाई गईं तथा ` 7100 मिशन हेतु सहयोग स्वरूप प्राप्त हुए।

बुद्धिमान मृत्यु से कभी हैरान नहीं होते, किन्तु वो जाने के लिए सदैव तैयार रहते हैं।

– जीन डी ला फोनटेन

भावी शिविर

आत्मबल विकास शिविर, रुड़की

(26 - 30 सितम्बर, 2018)

दिनांक	प्रात:कालीन सत्र 8:30-10:00	सायंकालीन सत्र 5:30-7:00
26.09.2018	--	क्या मैं अकेला हूँ?
27.09.2018	पाया ही पाया	किस किसकी सुनूँ?
28.09.2018	नज़रिया चाहिये	परलोक से सम्पर्क
29.09.2018	देने की आदत	परलोकवासियों से सम्बन्ध
30.09.2018	क्या मैं जानता हूँ?	--

स्थान: देवाश्रम, 32, सिविल लाइन्स, रुड़की फोन नं0 01332.272000

Special Issue of Satya Dev Samvaad

The purpose of this special issue of Satya Dev Samvaad is to show why and how the life we live today determines the quality of life we each will live after we die.

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र :

सत्य धर्म बोध मिशन

रुड़की (99271-46962), दिल्ली (98992-15080), भोपाल (97700-12311), सहारनपुर (98976-22120), गुवाहटी (94351-06136), ग़ाज़ियाबाद (93138-08722), कपूरथला (98145-02583), चण्डीगढ़ (0172-2646464), पद्मपुर (09309-303537), अम्बाला (94679-48965), मुम्बई (9870705771), पानीपत (94162-22258), लुधियाना (70094-36618)

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफसैट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया

सम्पादक - डॉ0 नवनीत अरोड़ा, D-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की

ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242